

Quick word tests

तरक्क्री	तरक्की	आह्लाद	आह्लाद	फ्रीज	फ्रीज	मगज़	मगज़	हृत्स्थल	हृत्स्थल	सिर्फ	सिर्फ
ज़्यादा	ज़्यादा	ब्राह्मण	ब्राह्मण	ह्रितिक	ह्रितिक	सम्यग्ज्ञान	सम्यग्ज्ञान	ज्योत्स्ना	ज्योत्स्ना	व्हिस्की	व्हिस्की
मन्ज़ूर	मन्ज़ूर	मिस्त्री	मिस्त्री	एल्ज़े	एल्ज़े	दिग्दर्शन	दिग्दर्शन	ईषत्स्पृष्ट	ईषत्स्पृष्ट	इश्क	इश्क
इलेक्ट्रान	इलेक्ट्रान	दुष्प्रह्य	दुष्प्रह्य	उत्प	उत्प	पंक्ति	पंक्ति	उत्सुत	उत्सुत	प्रश्न	प्रश्न
स्ट्रीटकार	स्ट्रीटकार	अद्भुत	अद्भुत	उत्प	उत्प	मंगलवार	मंगलवार	सद्गति	सद्गति	रुश्द	रुश्द
छुट्टी	छुट्टी	इल्ज़ाम	इल्ज़ाम	रत्न	रत्न	दुर्लभ्य	दुर्लभ्य	सद्गन्ध	सद्गन्ध	वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य
महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अक्षरे	अक्षरे	सज़्स	सज़्स	पच्चीस	पच्चीस	उद्घाटन	उद्घाटन	ओष्ठ्य	ओष्ठ्य
ज्येष्ठ	ज्येष्ठ	ज्ञान	ज्ञान	एज्जा	एज्जा	अच्छा	अच्छा	ज़िद्दी	ज़िद्दी	मिस्त्री	मिस्त्री
दर्शात	दर्शात	मौके	मौके	ब्यर्थे	ब्यर्थे	उज़्ज	उज़्ज	प्रसिद्ध	प्रसिद्ध	आह्वान	आह्वान
चिट्ठी	चिट्ठी	कैंटोमेंट	कैंटोमेंट	तरक्क्री	तरक्क्री	संस्कृत	संस्कृत	उद्बोध	उद्बोध	आह्लाद	आह्लाद
वाङ्मय	वाङ्मय	छूट कुछ	छूट कुछ	फ़ैक्चर	फ़ैक्चर	हिंस्र	हिंस्र	द्रव	द्रव	हास	हास
वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य	करेंट	करेंट	डॉक्टर	डॉक्टर	छुट्टी	छुट्टी	दारिद्र्य	दारिद्र्य	अंकुड़ा	अंकुड़ा
पुनस्स्थापना	पुनस्स्थापना	राष्ट्रून	राष्ट्रून	इलेक्ट्रॉन	इलेक्ट्रॉन	चिट्ठी	चिट्ठी	अध्रुव	अध्रुव	अंतर्निहित	अंतर्निहित
स्वास्थ्य	स्वास्थ्य	काँफी	काँफी	रक्त	रक्त	विशाखपटनम	विशाखपटनम	मंज़ूर	मंज़ूर	अन्तः	अन्तः
कम्प्यूटर	कम्प्यूटर	हिंदू-मुस्लिम	हिंदू-मुस्लिम	वक्त्र	वक्त्र	ट्रेन	ट्रेन	मंज़ी	मंज़ी	अंतर्वेशन	अंतर्वेशन
सान्ध्य	सान्ध्य	करणाऱ्या	करणाऱ्या	युक्त्यभास	युक्त्यभास	सुपाठ्य	सुपाठ्य	स्वातंत्र्य	स्वातंत्र्य	अग्नि	अग्नि
इज़्जत	इज़्जत	स्नेह	स्नेह	वक्त्र	वक्त्र	लड्डू	लड्डू	द्वंद्व	द्वंद्व	अद्भुत	अद्भुत
उज्ज्वल	उज्ज्वल	श्री	श्री	शुक्ल	शुक्ल	ब्रह्मण्य	ब्रह्मण्य	उन्नीस	उन्नीस	छुछुंदर	छुछुंदर
प्राप्त्याशा	प्राप्त्याशा	स्त्री	स्त्री	रिक्षा	रिक्षा	उत्क्रम	उत्क्रम	इंस्टिट्यूट	इंस्टिट्यूट	हुंकार	हुंकार
इकत्तीस	इकत्तीस	ध्वां	ध्वां	पक्ष	पक्ष	उत्क्षेप	उत्क्षेप	उन्हें	उन्हें	हित इच्छुक	हित इच्छुक
सत्रह	सत्रह	शक्ति	शक्ति	लक्ष्मी	लक्ष्मी	विद्युत्ग्रहक	विद्युत्ग्रहक	दीन्हो	दीन्हो	कुरी	कुरी
पद्म	पद्म	महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अभक्ष्य	अभक्ष्य	महत्त्व	महत्त्व	नैप्स्यून	नैप्स्यून	कुल्हिया	कुल्हिया
विद्यार्थी	विद्यार्थी	कट्टू	कट्टू	दिक्स्थापन	दिक्स्थापन	पत्थर	पत्थर	प्राप्त	प्राप्त		
उन्नीस	उन्नीस	रूप	रूप	सख्त	सख्त	विद्युत्दर्शी	विद्युत्दर्शी	सब्जी	सब्जी		
पश्चिम	पश्चिम	हूँ	हूँ	अख्यार	अख्यार	पत्नी	पत्नी	छब्बीस	छब्बीस		
श्रीलंका	श्रीलंका	बुत्तो	बुत्तो	ज़ख्म	ज़ख्म	सपत्न्य	सपत्न्य	मार्किट	मार्किट		
विश्वविद्यालय	विश्वविद्यालय	बार्गी	बार्गी	ख्रिष्टां	ख्रिष्टां	उत्प्रवास	उत्प्रवास	दुर्ज्ञेय	दुर्ज्ञेय		
स्नान	स्नान	कुंग	कुंग	फ़ख्र	फ़ख्र	ल्याहिक	त्र्याहिक	उर्दू	उर्दू		
बुद्ध	बुद्ध	हूप	हूप	अग्रास	अग्रास	विद्युतशक्ति	विद्युतशक्ति	निर्द्वन्द्व	निर्द्वन्द्व		

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्रवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ॥ अर्थात् तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात् एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात् निकास पद्धति होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात् उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागति जाते हैं जो खुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो खुद ढूँढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्रवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ॥ अर्थात् तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात् एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात् निकास पद्धति होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात् उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागति जाते हैं जो खुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो खुद ढूँढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

गुदगुदी | शायरी | टेक ज्ञान | Hinglish News | गेम्स | गरमा गरम | Travel | Deals | Property | चुनाव

सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके,
मिडकैप-स्मॉलकैप में उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा
निकालने पर देना होगा
टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा
विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की
मेहनत, चीन से आया
तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद
शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए
दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं
होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़
में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के
सामने लगे 'प्रियंका-
प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा
विदेशी पूंजी का टॉनिक

उग्र में अंधेरा दूर करने के
लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो
अबोध बच्चियों से दुष्कर्म

सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके,
मिडकैप-स्मॉलकैप में
उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा
निकालने पर देना होगा
टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा
विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की
मेहनत, चीन से आया
तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद
शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए
दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं
होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़
में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के
सामने लगे 'प्रियंका-
प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा
विदेशी पूंजी का टॉनिक

उग्र में अंधेरा दूर करने के
लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो
अबोध बच्चियों से दुष्कर्म

119 देशों के बच्चों ने UAE का राष्ट्रगान गाकर बनाया रिकॉर्ड

केवल 6 सेकेंड में 'आउट ऑफ स्टॉक' हुआ जियाओमी रेडमी नोट

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फ़ैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़ें - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फ़ैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़ें - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

तीन मिररलेस कैमरे के साथ आया निकॉन

Publish Date: Mon, 01 Dec 2014 10:12 AM (IST) | Updated Date: Mon, 01 Dec 2014 11:35 AM (IST)

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमशः 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मूविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5 मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1 वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंट्रास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4 एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमशः 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मूविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5 मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1 वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंट्रास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4 एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

बेंगलुरु। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

बेंगलुरु। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत सफलता है

फोटो में देखें, क्या हुआ जब ग्रांड फैशन इवेंट में Bollywood Divas ने रैंप पर उतरकर बिखेरे जलवे

गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवतः खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट॥

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रखे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी नदियों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करें। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नही होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झुँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को परबत कर दिखाऊँ

गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवतः खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट ॥

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रखे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान ॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी नदियों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करें। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नही होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झुँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को

और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं॥

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं॥

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसँ भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढ़ने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वही झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने

परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं॥

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं॥

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसँ भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढ़ने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वही झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहुत सी नाँह-नूह की और कहा -

पपकपवपवकवव
 पपखपवपवखवव
 पपगपवपवगवव
 पपघपवपवघवव
 पपङपवपवङवव
 पपचपवपवचवव
 पपछपवपवछवव
 पपजपवपवजवव
 पपझपवपवझवव
 पपञपवपवञवव
 पपटपवपवटवव
 पपठपवपवठवव
 पपडपवपवडवव
 पपढपवपवढवव
 पपणपवपवणवव
 पपतपवपवतवव
 पपथपवपवथवव
 पपदपवपवदवव
 पपधपवपवधवव
 पपनपवपवनवव
 पपपपवपवपवव
 पपफपवपवफवव
 पपबपवपवबवव
 पपभपवपवभवव
 पपमपवपवमवव
 पपयपवपवयवव
 पपरपवपवरवव
 पपलपवपवलवव
 पपळपवपवळवव
 पपवपवपवववव
 पपशपवपवशवव
 पपषपवपवषवव
 पपसपवपवसवव

पपहपवपवहवव
पपक्कपवपवक्कवव
पपखपवपवखवव
पपगपवपवगवव
पपजपवपवजवव
पपङ्गपवपवङ्गवव
पपढ्गपवपवढ्गवव
पपफ्फपवपवफ्फवव
पपयपवपवयवव
पपक्षपवपवक्षवव
पपज्ञपवपवज्ञवव

Vowel spacing

पपअपवपवअवव
पपऔपवपवऔवव
पपऑपवपवऑवव
पपइपवपवइवव
पपईपवपवईवव
पपउपवपवउवव
पपऊपवपवऊवव
पपएपवपवएवव
पपऐपवपवऐवव
पपँपवपवँवव
पपैपवपवैवव
पपआपवपवआवव
पपओपवपवओवव
पपऔपवपवऔवव
पपऋपवपवऋवव
पपॠपवपवॠवव
पपऌपवपवऌवव
पपॡपवपवॡवव

Rakar spacing

पपक्रपवपवक्रवव
पपख्रपवपवख्रवव
पपग्रपवपवग्रवव
पपघ्नपवपवघ्नवव
पपङ्गपवपवङ्गवव
पपचनपवपवचनवव
पपछपवपवछवव
पपज्जपवपवज्जवव
पपझपवपवझवव
पपञ्जपवपवञ्जवव
पपट्टपवपवट्टवव
पपठ्ठपवपवठ्ठवव
पपड्डपवपवड्डवव
पपढ्ढपवपवढ्ढवव
पपण्णपवपवण्णवव
पपत्तपवपवत्तवव
पपथ्थपवपवथ्थवव
पपद्वपवपवद्ववव
पपध्धपवपवध्धवव
पपन्नपवपवन्नवव
पपप्रपवपवप्रवव
पपफ़पवपवफ़वव
पपभ्रपवपवभ्रवव
पपभ्रपवपवभ्रवव
पपय्यपवपवय्यवव
पपरूपपवपवरूपवव
पपल्लपवपवल्लवव
पपत्रपवपवत्रवव
पपश्रपवपवश्रवव
पपष्णपवपवष्णवव
पपस्सपवपवस्सवव
पपह्हपवपवह्हवव

पपळ्पवपवळ्वव
पपक्षपवपवक्ष्वव
पपज्जपवपवज्ज्वव

Conjunct spacing

पपक्तपवपवक्तवव
पपरूपवपवरूपवव
पपरूपवपवरूपवव
पपङ्चपवपवङ्चवव
पपज्जपवपवज्जवव
पपज्थपवपवज्थवव
पपज्यपवपवज्यवव
पपज्सपवपवज्सवव
पपछ्यपवपवछ्यवव
पपत्यपवपवत्यवव
पपठ्यपवपवठ्यवव
पपङ्गपवपवङ्गवव
पपढ्यपवपवढ्यवव
पपट्टपवपवट्टवव
पपट्ठपवपवट्ठवव
पपठ्ठपवपवठ्ठवव
पपड्डपवपवड्डवव
पपड्डुपवपवड्डुवव
पपड्डुपवपवड्डुवव
पपत्तपवपवत्तवव
पपत्खपवपवत्खवव
पपत्थपवपवत्थवव
पपत्तपवपवत्तवव
पपत्सपवपवत्सवव
पपत्यपवपवत्यवव
पपद्धपवपवद्धवव
पपद्गपवपवद्गवव
पपद्गपवपवद्गवव
पपद्गपवपवद्गवव

[illegible]

U/Uu variant spacing

पपहुपवपवहुवव
पपहूपवपवहूवव
पपहूपवपवहूवव
पपहूपवपवहूवव
पपहुपवपवहुवव
पपहूपवपवहूवव

पपरुपवपरुवव
पपरूपवपरुवव
पपदुपवपवदुवव
पपदूपवपवदूवव
पपदृपवपवदृवव

Vowel sign spacing

पपपंपपपंपपकंपप
पपपॅपपपॅपकॅपप
पपपँपपपँपकँपप
पपपैंपपपैंपकैंपप
पपपैपपपैपकैपप
पपपेपपपेपकेपप
पपपैपपपैपकैपप
पपपेपपपेपकेपप
पपपैपपपैपकैपप
पपपेपपपेपकेपप
पपपैपपपैपकैपप
पपपेपपपेपकेपप
पपपैपपपैपकैपप
पपपेपपपेपकेपप

पपपापपरापपकापप
पपपिपपरिपपकिपप
पपपीपपरीपपकीपप
पपपीपपरीपपकीपप
पपपीपपरीपपकीपप
पपपीपपरीपपकीपप
पपपीपपरीपपकीपप
पपपीपपरीपपकीपप
पपपीपपरीपपकीपप
पपपीपपरीपपकीपप
पपपीपपरीपपकीपप
पपपीपपरीपपकीपप
पपपीपपरीपपकीपप
पपपीपपरीपपकीपप
पपपीपपरीपपकीपप

पपपौपपरोपपकौपप
पपपौपपरोपपकौपप
पपपौपपरोपपकौपप

पपपुपपरुपपकुपप
पपपूपपरुपपकूपप
पपपृपपरुपपकृपप
पपपृपपरुपपकृपप
पपपूपपरुपपकूपप
पपपूपपरुपपकूपप

पपपपपरपपकपप
पपपपपरपपकपप
पपपपपरपपकपप
पपपपपरपपकपप
पपपपपरपपकपप
पपपपपरपपकपप
पपपपपरपपकपप
पपपपपरपपकपप
पपपपपरपपकपप
पपपपपरपपकपप
पपपपपरपपकपप
पपपपपरपपकपप
पपपपपरपपकपप
पपपपपरपपकपप
पपपपपरपपकपप

पपपऽपवपववऽवव
पप?पवपव?वव
पपपःपवपववःवव

Numeral spacing

००००१०१०११
००१०१०११११
००२०१०१२११
००३०१०१३११
००४०१०१४११
००५०१०१५११
००६०१०१६११
००७०१०१७११
००८०१०१८११
००९०१०१९११

Letter-punct spacing

पपक, पवक.
पपख, पवख.
पपग, पवग.
पपघ, पवघ.
पपङ, पवङ.
पपच, पवच.
पपछ, पवछ.
पपज, पवज.
पपझ, पवझ.
पपञ, पवञ.
पपट, पवट.
पपठ, पवठ.
पपड, पवड.
पपढ, पवढ.
पपण, पवण.
पपत, पवत.
पपथ, पवथ.
पपद, पवद.
पपध, पवध.
पपन, पवन.
पपप, पवप.

पपफ, पवफ.
पपब, पवब.
पपभ, पवभ.
पपम, पवम.
पपय, पवय.
पपर, पवर.
पपल, पवल.
पपळ, पवळ.
पपव, पवव.
पपश, पवश.
पपष, पवष.
पपस, पवस.
पपह, पवह.
पपक्र, पवक्र.
पपख, पवख.
पपग, पवग.
पपज, पवज.
पपङ, पवङ.
पपढ, पवढ.
पपफ़, पवफ़.
पपय़, पवय़.
पपक्ष, पवक्ष.
पपज्ञ, पवज्ञ.

पपअ, पवअ.
पपओ, पवओ.
पपऔ, पवऔ.
पपऋ, पवऋ.
पपॠ, पवॠ.
पपॡ, पवॡ.
पपॢ, पवॢ.
पपॣ, पवॣ.
पप।, पव।.
पप॥, पव॥.
पप०, पव०.
पप१, पव१.
पप२, पव२.
पप३, पव३.
पप४, पव४.
पप५, पव५.
पप६, पव६.
पप७, पव७.
पप८, पव८.
पप९, पव९.

पपआ, पवआ.
पपओ, पवओ.
पपऔ, पवऔ.
पपऋ, पवऋ.
पपॠ, पवॠ.
पपॡ, पवॡ.
पपॢ, पवॢ.
पपॣ, पवॣ.
पप।, पव।.
पप॥, पव॥.

पपङ्, पवङ्.
पपछ्, पवछ्.
पपट्, पवट्.
पपठ्, पवठ्.
पपड्, पवड्.
पपढ्, पवढ्.
पपग्, पवग्.
पपज्, पवज्.
पपङ्, पवङ्.
पपढ्, पवढ्.
पपक्, पवक्.
पपख्, पवख्.
पपग, पवग.
पपज, पवज.
पपङ, पवङ.
पपढ, पवढ.
पपफ़, पवफ़.
पपय़, पवय़.
पपक्ष, पवक्ष.
पपज्ञ, पवज्ञ.

पपक्त, पवक्त.
पपरु, पवरु.
पपरू, पवरू.
पपट्ट, पवट्ट.
पपठ्ठ, पवठ्ठ.
पपड्ड, पवड्ड.
पपड्ड, पवड्ड.
पपड्ड, पवड्ड.
पपड्ड, पवड्ड.
पपड्ड, पवड्ड.
पपड्ड, पवड्ड.
पपड्ड, पवड्ड.
पपड्ड, पवड्ड.
पपड्ड, पवड्ड.
पपड्ड, पवड्ड.
पपड्ड, पवड्ड.
पपड्ड, पवड्ड.
पपड्ड, पवड्ड.
पपड्ड, पवड्ड.
पपड्ड, पवड्ड.
पपड्ड, पवड्ड.

पपद्, पवद्.
पपष्ट, पवष्ट.
पपम्भ, पवम्भ.
पपष्ठ, पवष्ठ.
पपल्ज, पवलज.
पपह्ल, पवह्ल.
पपह्ल, पवह्ल.
पपह्ल, पवह्ल.
पपह्ल, पवह्ल.

पपहु, पवहु.
पपहु, पवहु.
पपहु, पवहु.
पपहु, पवहु.
पपहु, पवहु.
पपहु, पवहु.
पपहु, पवहु.
पपरु, पवरु.
पपरू, पवरू.
पपदु, पवदु.
पपदू, पवदू.
पपदृ, पवदृ.

-
पपक; पवक:
पपख; पवख:
पपग; पवग:
पपघ; पवघ:
पपङ; पवङ:
पपच; पवच:
पपछ; पवछ:
पपज; पवज:
पपझ; पवझ:
पपञ; पवञ:
पपट; पवट:
पपठ; पवठ:

pg 9/18

पपव! पवव?	पपड्र! पवड्र?		पपफ-फपव	पपआ-आपव	पपह-हपव	"डपवपड"
पपश! पवश?	पपछ! पवछ?	पपहु! पवहु?	पपब-बपव	पपओ-ओपव	पपष्ट-ष्टपव	"ढपवपढ"
पपष! पवष?	पपट्र! पवट्र?	पपहू! पवहू?	पपभ-भपव	पपऔ-औपव	पपभ्र-भ्रपव	"णपवपण"
पपस! पवस?	पपत्र! पवत्र?	पपह्! पवह्?	पपम-मपव	पपऋ-ऋपव	पपष्ठ-ष्ठपव	"तपवपत"
पपह! पवह?	पपड्र! पवड्र?	पपह्! पवह्?	पपय-यपव	पपऌ-ऌपव	पपत्ज-त्जपव	"थपवपथ"
पपक्र! पवक्र?	पपद्र! पवद्र?	पपहु! पवहु?	पपर-रपव	पपल-लपव	पपल्ल-ल्लपव	"दपवपद"
पपख! पवख?	पपद्र! पवद्र?	पपहू! पवहू?	पपल-लपव	पपलृ-लृपव	पपल्ल-ल्लपव	"धपवपध"
पपग! पवग?	पपर! पवर?	पपरु! पवरु?	पपळ-ळपव		पपल्ल-ल्लपव	"नपवपन"
पपज! पवज?	पपह्! पवह्?	पपरू! पवरू?	पपव-वपव		पपल्ल-ल्लपव	"पपवपप"
पपड़! पवड़?	पपळ! पवळ?	पपदु! पवदु?	पपश-शपव	पपङ्-ङपव		"फपवपफ"
पपढ़! पवढ़?		पपदू! पवदू?	पपष-षपव	पपछ-छपव	पपहु-हुपव	"बपवपब"
पपफ्र! पवफ्र?	पपक्त! पवक्त?	पपदृ! पवदृ?	पपस-सपव	पपट्र-ट्रपव	पपहू-हूपव	"भपवपभ"
पपय! पवय?	पपरु! पवरु?		पपह-हपव	पपत्र-त्रपव	पपह्-हपव	"मपवपम"
पपक्ष! पवक्ष?	पपरू! पवरू?	-	पपक्र-क्रपव	पपङ्-ङपव	पपह्-हपव	"यपवपय"
पपज्ञ! पवज्ञ?	पपट्र! पवट्र?	पपक-कपव	पपख-खपव	पपद्र-द्रपव	पपहु-हुपव	"रपवपर"
	पपट्रु! पवट्रु?	पपख-खपव	पपग-गपव	पपद्र-द्रपव	पपहू-हूपव	"लपवपल"
पपअ! पवअ?	पपठु! पवठु?	पपग-गपव	पपज-जपव	पपर-रपव	पपरु-रूपव	"ळपवपळ"
पपअे! पवअे?	पपडू! पवडू?	पपघ-घपव	पपड़-ड़पव	पपह-हपव	पपरू-रूपव	"वपवपव"
पपअै! पवअै?	पपडू! पवडू?	पपङ-ङपव	पपढ़-ढ़पव	पपळ-ळपव	पपदु-दुपव	"शपवपश"
पपइ! पवइ?	पपडू! पवडू?	पपच-चपव	पपफ्र-फ्रपव		पपदू-दूपव	"षपवपष"
पपई! पवई?	पपद्ध! पवद्ध?	पपछ-छपव	पपय-यपव	पपक्त-क्तपव	पपदृ-दृपव	"सपवपस"
पपउ! पवउ?	पपद्र! पवद्र?	पपज-जपव	पपक्ष-क्षपव	पपरु-रूपव		"हपवपह"
पपऊ! पवऊ?	पपद्र! पवद्र?	पपझ-झपव	पपज्ञ-ज्ञपव	पपरू-रूपव	-	"क्रपवपक्र"
पपए! पवए?	पपद्ध! पवद्ध?	पपञ-अपव		पपट्र-ट्रपव	"कपवपक"	"खपवपख"
पपऐ! पवऐ?	पपद्ध! पवद्ध?	पपट-टपव	पपअ-अपव	पपट्र-ट्रपव	"खपवपख"	"गपवपग"
पपऐ! पवऐ?	पपद्ध! पवद्ध?	पपठ-ठपव	पपअे-अेपव	पपठ-ठपव	"गपवपग"	"जपवपज"
पपऐ! पवऐ?	पपह्! पवह्?	पपड-डपव	पपअै-अैपव	पपडू-डूपव	"घपवपघ"	"ङपवपङ"
पपआ! पवआ?	पपष्ट! पवष्ट?	पपढ-ढपव	पपङ-ङपव	पपडू-डूपव	"ङपवपङ"	"ढपवपढ"
पपओ! पवओ?	पपभ्र! पवभ्र?	पपण-णपव	पपई-ईपव	पपडू-डूपव	"चपवपच"	"फपवपफ"
पपऔ! पवऔ?	पपष्ठ! पवष्ठ?	पपत-तपव	पपउ-उपव	पपद्ध-द्धपव	"छपवपछ"	"यपवपय"
पपऋ! पवऋ?	पपत्ज! पवत्ज?	पपथ-थपव	पपऊ-ऊपव	पपद्र-द्रपव	"जपवपज"	"क्षपवपक्ष"
पपऌ! पवऌ?	पपल्ल! पवल्ल?	पपद-दपव	पपए-एपव	पपद्र-द्रपव	"झपवपझ"	"ज्ञपवपज्ञ"
पपलृ! पवलृ?	पपल्ल! पवल्ल?	पपध-धपव	पपऐ-ऐपव	पपद्र-द्रपव	"अपवपअ"	
पपलृ! पवलृ?	पपल्ल! पवल्ल?	पपन-नपव	पपऐ-ऐवव	पपद्र-द्रपव	"टपवपट"	"अपवपअ"
	पपह्! पवह्?	पपप-पपव	पपऐ-ऐपव	पपद्ध-द्धपव	"ठपवपठ"	"अैपवपअै"

pg 11/18

pg 12/18

pg 13/18

पपचक्रपपचखपपचापपच्यपपच्हपपच्यप
 पछपपचजपपचझपपचञपपचटपपचठपपचडप
 पचढपपचापपचतपपचथपपचदपपचधपपचनप
 पचनपपचमपपचफपपचबपपचभपपचमपपचयप
 पघपपचरपपचलपपचळपपचळपपचवप
 पशपपचषपपचसपपचहपपचक्रपपचखपपचाप
 पजपपचहपपचढपपचफपपचयपप

पपइकपपइखपपइगपपइघपपइङपपइचप
 पइछपपइजपपइझपपइञपपइटपपइठपपइडप
 पइढपपइणपपइतपपइथपपइदपपइधपपइनप
 पइत्तपपइमपपइफपपइबपपइभपपइमपपइयप
 पइपपपइरपपइलपपइळपपइळपपइवपपइशप
 पइषपपइसपपइहपपइक्कपपइखपपइगपपइजप
 पइहपपइढपपइफपपइयपप

पपङ्कपपङ्खपपङ्गपपङ्घपपङ्ङपपङ्चप
 पङ्छपपङ्जपपङ्झपपङ्ञपपङ्टपपङ्ठपपङ्प
 पङ्फपपङ्णपपङ्तपपङ्थपपङ्दपपङ्धपपङ्नप
 पङ्नपपङ्पपपङ्फपपङ्बपपङ्भपपङ्मपपङ्यप
 पङ्पपपङ्रपपङ्लपपङळपपङळपपङ्वपपङ्शप
 पङ्षपपङ्सपपङ्हपपङ्कपपङ्खपपङ्गपपङ्जप
 पङ्डपपङढपपङफपपङयपप

पपढकपपढखपपढगपपढघपपढङपपढचप
पढछपपढजपपढझपपढञपपढटपपढठपपढडप
पढढपपढणपपढतपपढथपपढदपपढधपपढनप
पढत्तपपढपपपढफपपढबपपढभपपढमपपढयप
पढ्रपपढरपपढलपपढळपपढळपपढवपपढशप
पढषपपढसपपढहपपढकपपढखपपढगपपढजप
पढङपपढढपपढफपपढयपप

पपणकपपणखपपणगपपणघपपणङपपणचप
पणछपपणजपपणझपपणञपपणटपपणठपपणडप
पणढपपणणपपणतपपणथपपणदपपणधपपणनप
पणत्तपपणपपपणफपपणबपपणभपपणमपपणयप
पण्रपपणरपपणलपपणळपपणळपपणवपपणशप
पणषपपणसपपणहपपणकपपणखपपणगपपणजप
पणङपपणढपपणफपपणयपप

पपत्कपपत्खपपत्गपपत्घपपत्ङपपत्चपपत्छप
पत्जपपत्झपपत्ञपपत्टपपत्ठपपत्डपपत्ढपपत्गप
पत्तपपत्थपपत्दपपत्थपपत्तपपत्तपपत्पपपत्फप
पत्बपपत्भपपत्मपपत्त्यपपत्त्रपपत्त्रपपत्तपपत्तप
पत्लपपत्त्वपपत्शपपत्षपपत्सपपत्हपपत्कपपत्खप
पत्गपपत्जपपत्ङपपत्ढपपत्फपपत्यपप

पपथकपपथखपपथापपथघपपथङपपथचपपथछप
पथजपपथझपपथञपपथटपपथठपपथडपपथढप
पथणपपथतपपथथपपथदपपथधपपथनपपथनप
पथयपपथफपपथबपपथभपपथमपपथयपपथयप
पथ्रपपथलपपथळपपथळपपथवपपथशपपथषप
पथसपपथहपपथकपपथखपपथापपथजपपथङप
पथढपपथफपपथयपप

पपदकपपदखपपदगपपदघपपदङपपदचप
पदछपपदजपपदझपपदञपपदटपपदठप
पदडपपदढपपदणपपदतपपदथपपददपपदधप
पदनपपदत्तपपदपपपदफपपदबपपदभपपदमप
पदयपपदरपपदलपपदळपपदळपपदवपपदशप
पदषपपदसपपदहपपदकपपदखप
पदगपपदजपपदङपपदढपपदफपपदयपप

पपधकपपधखपपधापपधघपपधङपपधचप
पधछपपधजपपधझपपधञपपधटपपधठपपधडप
पधढपपधणपपधतपपधथपपधदपपधधपपधनप
पधत्तपपधपपधफपपधबपपधभपपधमपपधयप
पध्रपपधरपपधलपपधळपपधळपपधवपपधशप
पधषपपधसपपधहपपधकपपधखपपधापपधजप
पधङपपधढपपधफपपधयपप

पपन्कपपन्खपपन्गपपन्घपपन्ङपपन्चपपन्छप
पन्जपपन्झपपन्ञपपन्टपपन्ठपपन्डपपन्ढप
पन्गपपन्तपपन्थपपन्दपपन्थपपन्तपपन्तपपन्त्यप
पन्फपपन्बपपन्भपपन्मपपन्त्यपपन्त्रपपन्त्रपपन्तप
पन्लपपन्लपपन्त्वपपन्शपपन्षपपन्सपपन्हपपन्कप
पन्खपपन्गपपन्जपपन्ङपपन्ढपपन्फपपन्त्यपप

पपत्कपपत्खपपत्गपपत्घपपत्ङपपत्चपपत्छप
पत्जपपत्झपपत्ञपपत्टपपत्ठपपत्डपपत्ढप
पत्गपपत्तपपत्थपपत्दपपत्थपपत्तपपत्तपपत्त्यप
पपत्फपपत्बपपत्भपपत्मपपत्त्यपपत्त्रपपत्त्रपपत्तप
पत्लपपत्लपपत्त्वपपत्शपपत्षपपत्सपपत्हपपत्कप
पत्खपपत्गपपत्जपपत्ङपपत्ढपपत्फपपत्त्यपप

पपप्कपपप्खपपप्गपपप्घपपप्ङपपप्चपपप्छप
पप्जपपप्झपपप्ञपपप्टपपप्ठपपप्डपपप्ढपपप्गप
पप्तपपप्थपपप्दपपप्थपपप्तपपप्तपपप्पपपप्फप
पप्बपपप्भपपप्मपपप्त्यपपप्त्रपपप्त्रपपप्तप
पप्लपपप्लपपप्त्वपपप्शपपप्षपपप्सपपप्हपपप्कप
पप्खपपप्गपपप्जपपप्ङपपप्ढपपप्फपपप्त्यपप

पपफकपपफखपपफगपपफघपपफङपपफचप
पफछपपफजपपफझपपफञपपफटपपफठपपफडप
पफढपपफणपपफतपपफथपपफदपपफधपपफनप
पफत्तपपफपपपफफपपफबपपफभपपफमपपफयप
पफ्रपपफरपपफलपपफळपपफळपपफवपपफशप
पफषपपफसपपफहपपफकपपफखपपफगपपफजप
पफङपपफढपपफफपपफयपप

पपक्कपपक्खपपक्गपपक्घपपक्ङपपक्चपपक्छप
पक्जपपक्झपपक्ञपपक्टपपक्ठपपक्डपपक्ढपपक्गप
पक्तपपक्थपपक्दपपक्थपपक्तपपक्तपपक्त्यप
पक्फपपक्बपपक्भपपक्मपपक्त्यपपक्त्रपपक्त्रपपक्तप
पक्लपपक्लपपक्त्वपपक्शपपक्षपपक्सपपक्हपपक्कप
पक्खपपक्गपपक्जपपक्ङपपक्ढपपक्फपपक्त्यपप

पपभकपपभखपपभागपपभघपपभङपपभचपपभछप
पभजपपभझपपभञपपभटपपभठपपभडपपभढप
पभणपपभतपपभथपपभदपपभधपपभनपपभनप
पभयपपभफपपभबपपभभपपभमपपभयपपभयप
पभ्रपपभरपपभलपपभळपपभळपपभवपपभशपपभषप
पभसपपभहपपभकपपभखपपभागपपभजपपभङप
पभढपपभफपपभयपप

पपम्कपपम्खपपम्गपपम्घपपम्ङपपम्चपपम्छप
पम्जपपम्झपपम्ञपपम्टपपम्ठपपम्डपपम्ढप
पम्गपपम्तपपम्थपपम्दपपम्थपपम्तपपम्तपपम्त्यप
पम्फपपम्बपपम्भपपम्मपपम्त्यपपम्त्रपपम्त्रपपम्तप
पम्लपपम्लपपम्त्वपपम्शपपम्षपपम्सपपम्हप
पम्कपपम्खपपम्गपपम्जपपम्ङपपम्ढपपम्फप
पम्त्यपप

less common half-forms

पपदकपपदखपपदगपपदघपपदङपपदचपपदछप
पदजपपदझपपदञपपदटपपदठपपदडपपदढप
पदणपपदतपपदथपपददपपदधपपदनपपदमप
पदफपपदबपपदभपपदमपप पपदयपपदलप
पदळपपदवपपदशपप पपदषपपदसपपदहपप

पपद्धकपपद्धखपपद्धगपपद्धघपपद्धङपपद्धचपपद्ध-
छप
पद्धजपपद्धझपपद्धञपपद्धटपपद्धठपपद्धडपपद्धढप
पद्धणपपद्धतपपद्धथपपद्धदपपद्धधपपद्धनपपद्धमप
पद्धफपपद्धबपपद्धभपपद्धमपप पपद्धयपपद्धलप
पद्धळपपद्धवपपद्धशपप पपद्धषपपद्धसपपद्धह-
पप

पपहकपपहखपपहगपपहघपपहङपपहचपपहछप
पहजपपहझपपहञपपहटपपहठपपहडपपहढप
पहणपपहतपपहथपपहदपपहधपपहनपपहमप
पहफपपहबपपहभपपहमपप पपहयपपहलप
पहळपपहवपपहशपप पपहषपपहसपपहहपप

पपक्रकपपक्रखपपक्रगपपक्रघपपक्रङपपक्रचप
पक्रछपपक्रजपपक्रझपपक्रञपपक्रटपपक्रठप
पक्रडपपक्रढपपक्रणपपक्रतपपक्रथपपक्रदप
पक्रधपपक्रनपपक्रमपपक्रमपपक्रबपपक्रभपपक्रमप
पपक्रमपपक्रमपपक्रमपपक्रमपवपपक्रशप
पपक्रमपपक्रमपपक्रमपप

पपरकपपरखपपरगपपरघपपरङपपरचप
परछपपरजपपरझपपरञपपरटपपरठप
परडपपरढपपरणपपरतपपरथपपरदपपरधप
परनपपरमपपरफपपरबपपरभपपरमप
परयपपरलपपरळपपरवपपरशप
परषपपरसपपरहपप

पपगकपपगखपपगगपपगघपपगङपपगचपपगछप
पगजपपगझपपगञपपगटपपगठपपगडपपगढप
पगणपपगतपपगथपपगदपपगधपपगनपपगमप
पगफपपगबपपगभपपगमपप पपगयपपगलपपगळप
पगमपवपपगशपप पपगषपपगसपपगहपप

पपघकपपघखपपघगपपघघपपघङपपघचपपघछप
पघजपपघझपपघञपपघटपपघठपपघडपपघढप
पघणपपघतपपघथपपघदपपघधपपघनपपघमप
पघफपपघबपपघभपपघमपप पपघयपपघलपपघळप
पघमपवपपघशपप पपघषपपघसपपघहपप

पपचकपपचखपपचगपपचघपपचङपपचचपपचछप
पचजपपचझपपचञपपचटपपचठपपचडपपचढप
पचणपपचतपपचथपपचदपपचधपपचनपपचमप
पचफपपचबपपचभपपचमपपचयपपचलपपचळप
पचमपवपपचशपप पचषपपचसपपचहपप

पपजकपपजखपपजगपपजघपपजङपपजचपपजछप
पजापपजझपपजञपपजटपपजठपपजडपपजढप
पजाणपपजातपपजथपपजदपपजधपपजनपपजमप
पजफपपजबपपजभपपजमपपजयपपजलप
पजळपपजवपपजशपप पजषपपजसपपजहपप

पपझकपपझखपपझगपपझघपपझङपपझचप
पझछपपझजपपझझपपझञपपझटपपझठपपझडप
पझढपपझणपपझतपपझथपपझदपपझधपपझनप
पझमपपझफपपझबपपझभपपझमपप पपझयप
पझलपपझळपपझमपवपपझशपपपझषपपझसप
पझहपप

पपञकपपञखपपजापपपञघपपञङपपपञचप
पञछपपञजपपञझपपञञपपञटपपञठप
पञडपपञढपपञणपपञतपपञथपपञदपपञधप
पञनपपञमपपञफपपञबपपञभपपञमपपपञयप

पञलपपञळपपञमपवपपञशपप पपञषपपञसप
पञहपप

पपणकपपणखपपणगपपणघपपणङपपणचपपणछप
पणजपपणझपपणञपपणटपपणठपपणडपपणढप
पणणपपणतपपणथपपणदपपणधपपणनपपणमप
पणफपपणबपपणभपपणमपप पपणयपपणलप
पणळपपणमपवपपणशपप पपणषपपणसपपणहपप

पपत्तकपपत्तखपपत्तापपत्तघपपत्तङपपत्तचपपत्तछप
पत्तजपपत्तझपपत्तञपपत्तटपपत्तठपपत्तडपपत्तढप
पत्तणपपत्ततपपत्तथपपत्तदपपत्तधपपत्तनपपत्तमप
पत्तफपपत्तबपपत्तभपपत्तमपप पपत्तयपपत्तलप
पत्तळपपत्तवपपत्तशपप पत्तषपपत्तसपपत्तहपप

पपथकपपथखपपथापपथघपपथङपपथचपपथछप
पथजपपथझपपथञपपथटपपथठपपथडपपथढप
पथणपपथतपपथथपपथदपपथधपपथनपपथमप
पथफपपथबपपथभपपथमपप पपथयपपथलप
पथळपपथमपवपपथशपप पपथषपपथसपपथहपप

पपधकपपधखपपधापपधघपपधङपपधचपपधछप
पधजपपधझपपधञपपधटपपधठपपधडपपधढप
पधणपपधतपपधथपपधदपपधधपपधनपपधमप
पधफपपधबपपधभपपधमपप पपधयपपधलप
पधळपपधमपवपपधशपप पपधषपपधसपपधहपप

पपनकपपनखपपनापपनघपपनङपपनचपपनछप
पनजपपनझपपनञपपनटपपनठपपनडपपनढप
पनाणपपनातपपनथपपनदपपनधपपननपपनमप
पनफपपनबपपनभपपनमपप पपनयपपनलप
पनळपपनमपवपपनशपप पनषपपनसपपनहपप

पपमकपपमखपपमापपमघपपमङपपमचपपमछप
पमजपपमझपपमञपपमटपपमठपपमडपपमढप
पमतपपमथपपमदपपमधपपमनपपममपपमफपपमबप
पमभपपममपप पमयपपमलपपमळपपममपवप

पपशपप पपषपपसपपहपप

पपकपपखपपगपपघपपङपपचप
 पपपपपपपपपपपपपपपपपपप
 पपपपपपपपपपपपपपपपपपप
 पपपपपपपपपपपपपपपपपपप
 पपपपपपपपपपपपपपपपपपप
 पपपपपपपपपपपपपपपपपपप

पपकपपखपपगपपघपपङपपचप
 पपपपपपपपपपपपपपपपपपप
 पपपपपपपपपपपपपपपपपपप
 पपपपपपपपपपपपपपपपपपप
 पपपपपपपपपपपपपपपपपपप
 पपपपपपपपपपपपपपपपपपप